सहभागिता विषयक दिशा-निर्देश

१. संगोष्ठी में सहभागी अध्यापकों के लिए पंजीकरण शुल्क रु. १०००/- तथा शोधार्थियों/विद्यार्थियों के लिए रु.५००/- होगा ।

२. पंजीकरण शुल्क का भुगतान डी.डी. द्वारा या संगोष्ठी के प्रथम दिन नकद किया जा सकता है।

३. डी.डी. Finance and Accounts Officer, University of Mumbai, Mumbai के नाम से बनाकर अध्यक्ष/संयोजक, डॉ. नगेंद्र राष्ट्रीय संगोष्ठी, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, रानडे भवन, कालीना, सांताक्रुज - पूर्व, मुंबई ४०००९८. इस पते पर भिजवाएँ।

४. संगोष्ठी के लिए पंजीकरण पत्र और डी.डी. भेजते समय लिफाफे (Envelope) पर ''डॉ. नगेंद्र जन्मशताब्दी राष्ट्रीय संगोष्ठी'' स्पष्ट अक्षरों में लिखा हो।

५. बाहर के प्रतिभागियों के लिए रहने की व्यवस्था के बारे में संयोजक को १२ फरवरी २०१७ तक ई-मेल से या फोन द्वारा सूचना देनी होगी। साथ ही पंजीकरण पत्र भेजना होगा। तभी व्यवस्था संभव हो पाएगी।

६. प्रतिभागियों को टी.ए./डी.ए. नहीं दिया जाएगा।

७. पंजीकरण - पत्र इस विवरणिका के साथ संलग्न है।

विनीत

अध्यक्ष
प्रो.डॉ. विष्णु सरवदे
हिंदी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय
भ्रमण ध्वनि: ८०८०८१९००५
९८६९३७९५३४
ई-मेल - drvishnusarwade@gmail.com

संयोजक
डॉ. बिनीता सहाय
हिंदी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय
भ्रमण ध्वनि: ९८१९५४२५२२
ई-मेल - binita.hindi@mu.ac.in

सहयोग :-
प्रो.डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, डॉ. दत्तात्रय मुरुमकर, डॉ. हूबनाथ पांडेय, डॉ. सचिन गपाट , प्रा. सुनील वळवी, डॉ. प्रज्ञा तिवारी

अभिपत्र भेजने संबंधी निर्देश

१) अभिपत्र प्रस्तुतकर्ता का नाम, पता, कॉलेज का पता, प्रपत्र का शीर्षक प्रथम पृष्ठ पर लिखा हो।

२) अभिपत्र ए-४ साइज के कागज पर एक ओर सिंगल स्पेस में टंकित (कम्प्यूटर) किया जाए। चारों तरफ डेढ़-डेढ़ इंच का हाशिया छोड़ा जाए।

३) १२ साईज के आकृतिदेव तथा यूनिकोड फॉन्ट का प्रयोग करें।

५) १२फरवरी तक आने वाले प्रपत्रों को ही परिसंवाद में शामिल किया जा सकेगा।

६) शोध आलेख Wordl File तथा PDF में नीचे दिए गए ई-मेल या डाक द्वारा अध्यक्ष/संयोजक, डॉ. नगेंद्र राष्ट्रीय संगोष्ठी, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, रानडे भवन, विद्यानगरी परिसर, कालीना सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई- ४०० ०९८. के पते पर भेजें।

७) अभिपत्र लेखक अपना संक्षिप्त परिचय संलग्न करें।

८) अभिपत्र के संशोधन का अधिकार समिति को है।

संपर्क: डॉ. बिनीता सहाय
Mob. +91 9819542522/E-mail: binita.hindi@mu.ac.in

संगोष्ठी के लिए आमंत्रित शोध आलेख के विषय

१. डॉ. नगेंद्र की भारतीय काव्यशास्त्र संबंधी आलोचना
२. डॉ. नगेंद्र की पाश्चात्य काव्यशास्त्र संबंधी आलोचना
३. व्यावहारिक आलोचना और डॉ. नगेंद्र
४. भारतीय रसवादी चिंतन परंपरा और डॉ. नगेंद्र
५. डॉ. नगेंद्र की वक्रोक्ति विषयक मान्यता
६. साधारणीकरण और डॉ. नगेंद्र
७. डॉ. नगेंद्र की ध्वनि विषयक मान्यता
८.रीतिकाव्य संबंधी डॉ. नगेंद्र के विचार
९. डॉ. नगेंद्र के आचार्य शुक्ल संबंधी विचार
१०. हिंदी के आधुनिक आलोचकों संबंधी डॉ. नगेंद्र के विचार
११. डॉ. नगेंद्र के अरस्तू संबंधी विचार
१२. डॉ. नगेंद्र की उदात्त संबंधी मान्यता
१३. आई.ए. रिचर्ड्स और डॉ. नगेंद्र
१४. डॉ. नगेंद्र की क्रोचे संबंधी मान्यता
१५. मार्क्सवाद और डॉ. नगेंद्र की मान्यता
१६. डॉ. नगेंद्र की नयी समीक्षा संबंधी अवधारणा
१७. डॉ. नगेंद्र की मनोविश्लेषण संबंधी मान्यता
१८. देव की कविता और डॉ. नगेंद्र
१९. सुमित्रानंदन पंत का काव्य और डॉ. नगेंद्र
२०. 'साकेत' संबंधी डॉ. नगेंद्र की समीक्षा
२१. हिंदी कथाकारों संबंधी डॉ. नगेंद्र के विचार
२२. हिंदी आलोचना में डॉ. नगेंद्र का समग्र अवदान

हिन्दी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय
द्वारा

वरिष्ठ आलोचक डॉ. नगेन्द्र की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

'हिन्दी आलोचना एवं डॉ. नगेन्द्र'

२०-२१ फरवरी २०१७

स्थान: विद्यानगरी परिसर सभागृह

निमंत्रक
प्रो. डॉ. विष्णु सरवदे
हिंदी विभागाध्यक्ष
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

संयोजक
डॉ. बिनीता सहाय
हिंदी विभाग

पंजीकरण - पत्र

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

''हिन्दी आलोचना एवं डॉ. नगेन्द्र''

२०-२१ फरवरी २०१७

नाम: .....

पद: ....

विभाग: .....

विश्वविद्यालय/ महाविद्यालय/संस्थान:.....

.....

ई-मेल: .....

दूरभाष: .....मोबाईल: .....

पंजीकरण: प्राध्यापक:१०००/-

शोधार्थी: ५००/-

मैं परिसंवाद में अभिपत्र प्रस्तुत करना चाहता/चाहती हूँ।

अभिपत्र का शीर्षक: .....

मैं परिसंवाद में भाग लेना चाहता/चाहती हूँ।

मैं राष्ट्रीय परिसंवाद में भाग लेने हेतु रू. .....

का ड्राफ्ट हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के नाम से प्रेषित कर रहा हूँ/कर रही हूँ।

ड्राफ्ट क्र: .....

बैंक का नाम: .....

दिनांक: ..... स्थान: .....

हिंदी विभाग की मुहर

हस्ताक्षर प्रतिभागी

हस्ताक्षर, अध्यक्ष

(अतिरिक्त फार्म के लिए छायाप्रति का प्रयोग करें।)

राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय में

हिन्दी के आधुनिक आलोचकों में डॉ. नगेन्द्र का नाम अग्रगण्य है। अंग्रेज़ी एवं हिन्दी में एम.ए. के पश्चात् हिन्दी में डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त डॉ. नगेन्द्र की पाश्चात्य एवं भारतीय दोनों काव्यशास्त्रों में समान गति थी, जिसे उन्होंने अपनी मौलिक, तर्कपूर्ण एवं सूक्ष्म विश्लेषणात्मक शैली से संपृक्त कर हिन्दी आलोचना को नयी दिशा दी। भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका' के 'वक्तव्य' में उन्होंने लिखा है, ''काव्यशास्त्र के अध्ययन में ज्यों-ज्यों मैंने प्रवेश किया, त्यों-त्यों यह एक तथ्य मेरे मन में स्पष्ट होता गया कि भारत तथा पश्चिम के दर्शनों की तरह ही यहाँ के काव्यशास्त्र भी एक-दूसरे के पूरक हैं, और पुनराख्यान आदि के द्वारा उनके आधार पर हमारे अपने साहित्य की परंपरा के अनुकूल एक संश्लिष्ट आधुनिक काव्यशास्त्र का निर्माण सहज संभव है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के उपरांत हिन्दी आलोचना जगत् में डॉ. नगेन्द्र श्रेष्ठ आलोचक के रूप में उभरे। कतिपय वैचारिक मतभेदों के बावजूद वे आचार्य शुक्ल से प्रभावित थे। साथ-ही अंग्रेज़ी के श्रेष्ठ आलोचकों की कृतियों का भी प्रभाव उनपर यथेष्ट था। डॉ. नगेन्द्र मूलत: रसवादी आलोचक माने जाते हैं। प्राचीन भारतीय रस-सिद्धांत में उनकी गहरी आस्था दीख पड़ती है। यद्यपि उन्होंने अपने लेखकीय जीवन में काव्य भी लिखे, पर उस पर छायावादी कविता का प्रभाव स्पष्ट था। वस्तुत: उनकी पहचान आलोचक के रूप में ही बनी। क्रोचे, आई. ए. रिचर्ड्स आदि के अध्ययन के फलस्वरूप उनका झुकाव सैद्धांतिक आलोचना की ओर हुआ। सैद्धांतिक आलोचना के साथ व्यावहारिक एवं मनोविश्लेषणात्मक आलोचना के क्षेत्र में उनका योगदान अभूतपूर्व है। फ्रायड के मनोविश्लेषण-शास्त्र को उन्होंने आलोचना के लिए एक नवीन उपकरण के रूप में ग्रहण किया है, जो रस सिद्धांत के विश्लेषण में पोषक सिद्ध हुआ है। 'रीति-काव्य की भूमिका' तथा 'देव और उनकी कविता' के भूमिका भाग में भारतीय काव्य-शास्त्र पर विचार किया गया है, जिसमें मनोविश्लेषण-शास्त्र के अध्ययन से काफ़ी सहायता मिली है। इन्होंने हिंदी आलोचना को अपनी इन मौलिक उद्भावनाओं से सतत समृद्ध किया है। ऐसे शलाका पुरुष की जन्मशताब्दी समारोह का आयोजन हमारे लिए गर्व का विषय है।

हिन्दी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

विश्वविद्यालय में एम. ए. की उपाधि के लिए हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था सन् १९५१ से प्रारम्भ हो गयी थी, परन्तु स्वतंत्र हिन्दी विभाग की स्थापना सन् १९७० में हुई। प्रारम्भ में विभाग में मात्र एक प्राध्यापक का पद था। धीरे-धीरे विभाग विकसित होता गया। आज यहाँ एम.ए. के साथ एम.फिल., पी.एचडी. एवं डी.लिट्. की उपाधि की व्यवस्था है। फिलहाल विभाग में प्राध्यापकों की संख्या ८ है, जिनमें २ प्रोफ़ेसर, २ सहयोगी प्रोफ़ेसर तथा ३सहायक प्रोफ़ेसर स्थायी रूप से कार्यरत हैं। प्रारंभ से ही विभाग हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता रहा है। समय-समय पर विभाग द्वारा हिंदी-सेवी विद्वानों का सम्मान एवं अवदान का मूल्यांकन भी होता रहा है। डॉ. नगेन्द्र जैसे विशिष्ट आलोचक की जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके समग्र प्रदेय को सुधी जनों के समक्ष लाने का प्रयास भी इसी क्रम की एक कड़ी है।

दिनांक: .../.../...

सेवा में
प्राचार्य/हिंदी विभागाध्यक्ष,
.....
.....
.....

महोदय/महोदया,

निवेदन है कि मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा "हिंदी आलोचना एवं डॉ. नगेंद्र'' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक २०-२१ फरवरी २०१७ को किया जा रहा है।

अत: आप से अनुरोध है कि अपने महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के प्राध्यापकों को उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय सहभाग हेतु अनुमति प्रदान कर कृतार्थ करें। सधन्यवाद!

भवदीय,

संयोजक
डॉ. बिनीता सहाय
हिंदी विभाग
मुंबई विश्वविद्यालय

अध्यक्ष
प्रो.डॉ. विष्णु सरवदे
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय